Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
Indian Philosophy (BA Part I Subsidiary)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lecture No. 18, Oct.
October 16, 2020

BA Part I Subsidiary

अनुमान प्रमाण के समर्थकों द्वारा अनुमान के खण्डन के आक्षेपों का खण्डन

अनुमान प्रमाण के समर्थकों ने अनुमान प्रमाण के विरुद्ध किये गए आक्षेपों का बलपूर्वक खण्डन किया है। इन खण्डनो में बौद्ध आचार्य धर्मकीर्ति तथा नैयायिक उदयनाचार्य के खण्डन प्रसिद्ध हैं।

बौद्ध आचार्य धर्मकीर्ति ने अनुमान की आवश्यकता और अनुमान के प्रमाण्य-व्यवस्थापन के खंडन के लिए प्रयुक्त चार्वाक के आपत्तियों की आलोचना करते हुए कहा है कि प्रत्यक्ष से मात्र परमार्थ या स्वलक्षण का ज्ञान होता है जो स्वलक्षण सर्वदा विलक्षण और निर्विशेष होता है। व्यवहार जगत या सांवृत्तिक ज्ञान, जो परोक्ष ज्ञान का विषय है, के लिए प्रत्यक्ष के अतिरिक्त अनुमान की प्रामाणिकता को स्वीकार करना ही होगा प्रमाण-सामान्य और और अप्रमाण-सामान्य दोनों का ज्ञान संपादित करने के लिए प्रत्यक्ष प्रमाण के अतिरिक्त अनुमान प्रमाण की भी आवश्यकता है।

प्रमाणरूप में अनुमान की प्रत्यक्ष-तुल्य प्रामाणिकता पर बल देते हुए धर्मकीर्ति ने कहा कि प्रत्यक्ष के समान अनुमान भी अविसंवादी है जो बहिरार्थ से उत्पन्न होता है। इसलिए अनुमान का भी प्रत्यक्ष के समान ही बल और प्रामाणिकता है। केवल वर्तमान और संबंधित विषयों का ग्राहक होने के कारण प्रत्यक्ष कालांतर में होने वाली घटनाओं का तथा पूर्वापर ज्ञान का साधक नहीं हो सकता, इसके लिए प्रत्यक्षेतर अनुमान प्रमाण की आवश्यकता सिद्ध होती है।

पुनः यदि पदार्थों के दोषरहित ज्ञान का साधन होने के कारण चार्वाक प्रत्यक्ष को प्रमाण रूप स्वीकार करते हैं तो चार्वाकों को अनुमान को भी प्रमाण-रूप स्वीकृति प्रदान करनी होगी, क्योंकि इसी आधार पर अनुमान भी दोषरहित ज्ञान को उत्पन्न करता है। यदि यह कहा जाए कि अनुमान आदि अन्य प्रक्षेतर प्रमाण सदैव निर्दोष नहीं होते , अतः वे अप्रमाणित हैं, तो ठीक वही आपत्ति प्रत्यक्ष प्रमाण के विरुद्ध भी उठाई जा सकती है, क्योंकि भ्रमात्मक प्रत्यक्ष आदि की स्थिति में प्रत्यक्ष भी दोषपूर्ण अवबोध उत्पन्न करता है।

पुनः एक ओर तो चार्वाक अनुमान को प्रमाण नहीं मानते दूसरी ओर परलोक आदि के खंडन के लिए चार्वाक स्वयं अनुमान का आश्रय लेते हैं। वस्तुतः परलोकादि का खंडन इंद्रिय-प्रत्यक्ष के द्वारा संभव नहीं क्योंकि परसों आदि इंद्रिय प्रत्यक्ष के विषय नहीं है अतः इनका खंडन निषेधमुख अनुमान से ही सम्भव होता है।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lecture No. 18, Oct.
October 16, 2020

अनुमान प्रमाण के अभाव में चार्वाक अपनी प्रतीति में अनुभूत प्रत्यक्ष का प्रमाण्य अन्य पुरुषों के समक्ष प्रतिपादित भी नहीं कर सकते क्योंकि अन्य पुरुषों की अभिवृत्तियों तथा चिंतन प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा ज्ञेय नहीं है। यदि चार्वाक कहे कि शारीरिक चेष्टाओं से अभिवृत्तियों तथा चिंताओं आदि का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, तो यह भी एक प्रकार का अनुमान ही होगा, अथवा इस प्रकार के ज्ञान को कारणता पर आधारित मानना होगा, जो चार्वाक को स्वीकार्य नहीं है।

न्याय दार्शनिक उदयनाचार्य ने भी आचार्य धर्मकीर्ति की भांति चार्वाकों के अनुमान विरोधी आक्षेपों का बहुविध खंडन प्रस्तुत किया है।

भारतीय दर्शन में ज्ञान के क्षेत्र में सर्वत्र निश्चयात्मकता ही प्रतिष्ठित है, किंतु चार्वाक ज्ञान के क्षेत्र में निश्चयात्मकता को बहिष्कृत कर संभावना को स्थापित करने की चेष्टा करते हैं। इस चार्वाक-चेष्टा का खंडन करते हुए उदयनाचार्य कहते हैं कि संभावना को न तो जीवन के क्रियाकलापों का आधार माना जा सकता है और नहीं संभावना के आधार पर तत्वमीमांसीय सत्यों का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। संभावना एक प्रकार का संशय और संशय प्रमा का विरोधी है।

उदयनाचार्य के अनुसार विश्व में अनेक ऐसे पदार्थ हैं जिनकी सत्ता प्रत्यक्षगम्य नहीं है, यथा चक्षु आदि इंद्रियों की सत्ता अनुमान द्वारा ही सिद्ध होती है प्रत्यक्ष से नहीं। अतः अनुमान को प्रमाण के क्षेत्र में बहिष्कृत नहीं किया जा सकता।

पुनः जिस व्यक्ति अथवा वस्तु को हमने कल देखा था और आज जिसे हम पुनः देख रहे हैं उस वस्तु के विषय में यह ज्ञान कैसे हो सकता है कि वह यह वही वस्तु अथवा विषय है? स्पष्टतः हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि उस अवधि में जिसमें हमने उस वस्तु अथवा व्यक्ति को नहीं देखा था वह वस्तु अथवा व्यक्ति अपलापित नहीं हुए थे। यह ज्ञान अनुमान द्वारा ही संभव है। इस प्रकार अनुभूति तथा ज्ञान की व्याख्या के लिए भी अनुमान की प्रामाणिकता अपरिहार्य है।

इसी प्रकार चार्वाकों द्वारा प्रस्तुत कारणता का खंडन भी अर्थहीन प्रतीत होता है क्योंकि यदि कारणता का खंडन किया जाए तो निश्चयात्मक ज्ञान तो दूर संदेह की संभावना भी नहीं होगी, क्योंकि संशय भी अकारण नहीं होता। यदि यह कहा जाए कि संशय अकारण है तो इससे सर्वसंभवात ही सिद्ध होता है और तब यह मानना होगा कि बालू से तेल अथवा बिना बीज के वृक्ष उत्पन्न हो सकते हैं।

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619

वेदांती श्रीहर्ष तथा शून्यतावादी बौद्धों ने भी अनुमान प्रमाण के विरुद्ध अनेक आक्षेप किए हैं। किंतु श्रीहर्ष तथा शून्यतावादीयों के मतों के से चार्वाकों के मत में भिन्नता है। श्रीहर्ष तथा शून्यतावादी बौद्ध परमार्थ के ज्ञान के लिए अनुमान को अपर्याप्त बताते हैं और जबकि परमार्थ और लौकिक ज्ञान का ही स्वीकार नहीं करते। श्रीहर्ष और शून्यतावादियो ने भी लौकिक जीवन के लिए अनुमान की उपादेयता को स्वीकार किया है।